आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 11 | उदयपुर शनिवार 15 जून 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

परिपक्व होता आजादी का उजास

सात दशक हो गये हमारी आजादी को मगर कई बार लगता है ज्यों-ज्यों समय बीतता है हमारी परिपक्वता अखण्ड होने की बजाय मोतीचूर की तरह-चूर-चूर होती जा रही है। आजादी के पहले को झांके जरा; कैसे सब संगठित थे। आजादी प्राप्त करने को एक साथ मुट्ठियां तानते थे।

प्रभात फेरियां निकाल सर्वजन को सचेचित करते थे। गर्व से सीना ही नहीं तानते, हाथों में झण्डा लिये स्वाभिमान की आंखों में आंखें डालकर जोश की हूंकार टंकारते, कदमताल करते गाते बढ़ते थे- 'शान न इसकी जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये।' और आज! वह असल मन प्रदूषित हुआ लगता है। देश के लिए समर्पण और जान की बाजी लगाने का भाव तिरोहित हुआ लगता है। कण्डों पर बाटियां सेक समूह भोज की प्रीति बढ़ाने की बजाय सत्ता हथियाने के हथकंडे जलजले उबाल खाते लगते हैं। अपनी आंखें बड़ी करने के बजाय एक-दूसरे को आंख दिखाने और आंख मारने में पोमा रहे हैं। जो पार्टी किसी समय पवन वेग से उड़ती थी, आज पंख फड़फड़ाने की स्थिति में भी कमजोर बनी हुई है।

जो बलशाली हैं वे भी व्यर्थ की दहाड़ और हूंकार में अपनी मांसपेशियां गरमा रहे हैं। ठण्डे मन से विकास का वितान तानने की सामर्थ्य वाले भी गरमा रहे हैं। विश्व में अपने राष्ट्र की सर्वश्रेष्ठता का रिकार्ड बनाने की बजाय सारा ध्यान ऐनकेन प्रकारेण दूसरों का रिकार्ड तोड़ने की होड़ाहोड़ी मची हुई है। माचीस की तिली जलाकर मीठा प्रकाश फैलाने की बजाय मशाल जलाकर चकाचौंध पैदा करने की विधियां खोजने-खोदने में खदबदी दांव लगाने की पहलवानी हो रही है।

देश ऐसे नहीं बनता है। न आगे बढ़ता है। उगता सूरज सभी को अच्छा लगता है। मनुष्य क्या पंछी और जड़ जगत तक उसकी अगवानी कर अभ्यर्थना करता है। अकारण की तपन भली नहीं होकर किसी का भला नहीं करती। गुड़ की भेली सबको स्वाद देती है। अपनी मिठास में सबको बांधती है। ऐसा बांध बंधन नहीं होता। उसका कण-कण स्नेह सौहार्द्र से भरपूर कीड़ी से लेकर करगेंट्ये तक को तृप्ति देता है।

राजनीति की आपसी रगड़पट्टी कहीं शोभा नहीं देती। देश बढ़ाने, देश बनाने की, रंग की राजनीति हो। देश सेवा की, जन सेवा की नीति लिये हो। वादों की, घोषणाओं की, गपड़शपड़ की राजनीति बहुत हो चुकी। ऐसी राजनीति करने वालों को जनता ने भी देख लिया है। रही सही को जनता फिर देख लेगी। अभी भी समय है, नेता सम्भल जायें। नहीं तो जनता सम्भला देगी। वे समझलें कि कहां हैं, कहां उन्हें होना चाहिये।

दूब तभी तक श्रेष्ठ होती है जब वह दूब बनी रहे। दूब बनी रहने से उसकी हरीतिमा बनी रहेगी। अपनी स्वाभिमानी नोक सदा ही सिर उठाये होगी। वह जन-समुदाय के चरण-कमलों से दबकर भी दबंग बनी रहेगी। उसकी निगाह पहाड़ की सबसे ऊपरी चोटी को परस किये रहेगी। दृष्टि में जरा सी चूक या खोटाई आई कि धड़ाम से उस पर कोई पहाड़ी पाथर गिरकर उसकी हवा फुस्स कर देगी।

नेताजी तो एक ही थे जो सबकी निगाहों में चढ़ गये। वे सुभाषचन्द्र बोस थे। उनका जन-आह्वान था- 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' ऐसे ही एक महाकवि हो गये माखनलाल चतुर्वेदी। उन्होंने तो अपना उपनाम ही 'एक भारतीय आत्मा' रख लिया था। उनकी 'एक फूल की चाह' कविता ने युवाओं की रग-रग में स्वतंत्रता का जोश भरा था। आज भी वे पंक्तियां उसी रूप में देशवासियों में दमखम भर रही हैं- 'मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फैंक / मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।'

हम सब अपनी राष्ट्र-बगिया के फूल ही हैं। कोई शक नहीं, हमारी इस बगिया पर कइयों की वक्र निगाहें हैं। आइये, हम सब मिल अपनी निगाहें तेज करें और अपने देश, अपने राष्ट्र को सोने की चिड़ियां बनाकर पूरे विश्व में विशुद्धि का शंखनाद करें। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की लिखी भारतमाता की वन्दना में अपना स्वर सौहार्द्र करें-

जय-जय भारतमाता
तेरा बाहर भी घर जैसा रहा प्यार ही पाता।

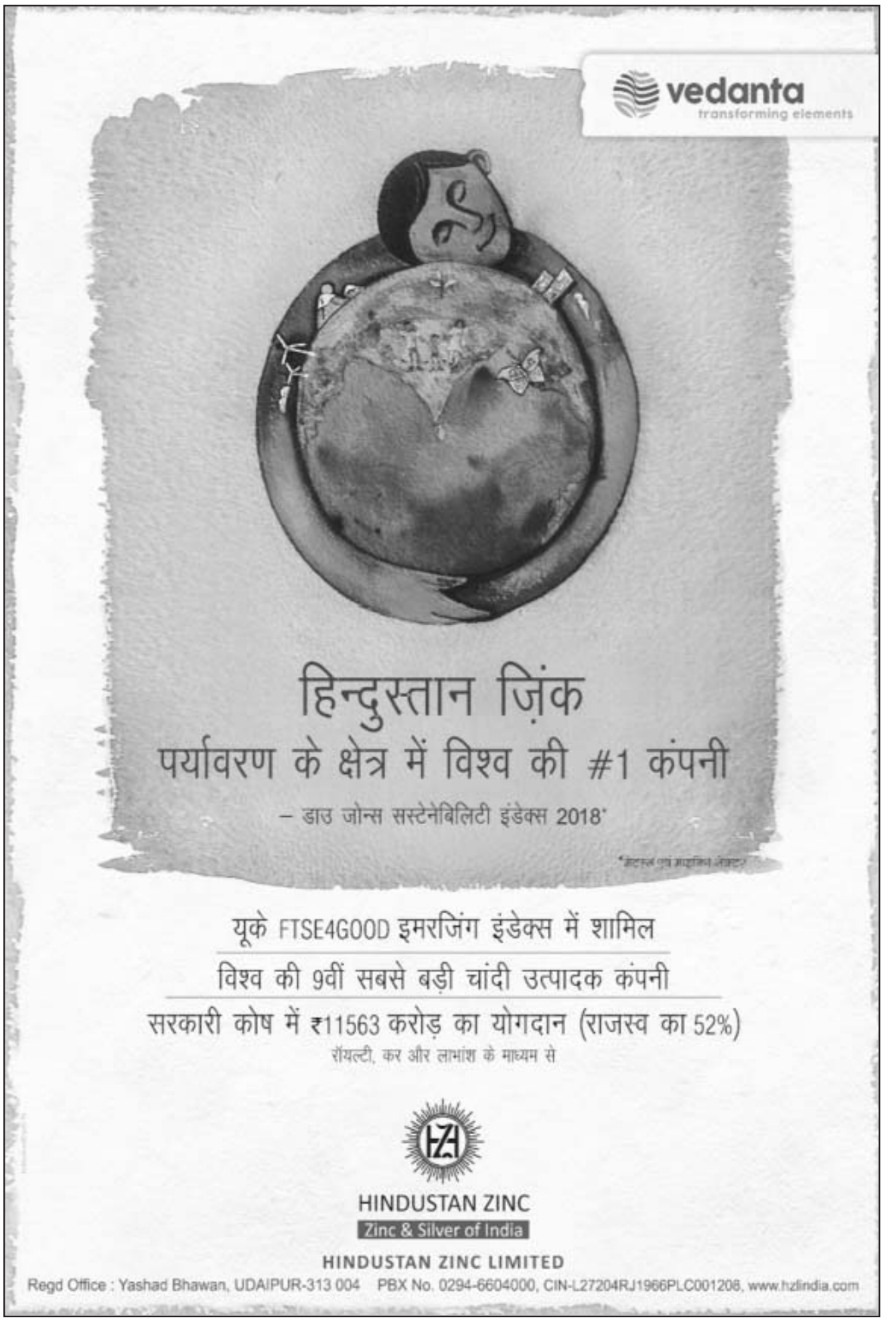

आदिम गंध के अध्येता डॉ. नरेन्द्र व्यास नहीं रहे

उदयपुर। आदिम गंध के अध्येता डॉ. नरेन्द्र व्यास का 87 वर्ष की उम्र में 6 जून को निधन हो गया। उन्हें एक जून को सांस लेने में तकलीफ के चलते हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया था जहां शाम 8 बजे उन्होंने अंतिम सांस ली। गोवा तथा अमेरिका में रह रहींउनकी दोनों पुत्रियों, श्रुति और नेहा ने उनकी अर्थी को कंधा दिया।

उनकी शवयात्रा में सभी क्षेत्रों में कार्यरत प्रबुद्धजनों एवं परिजनों ने भाग लिया। उनमें डॉ. बी. भण्डारी, डॉ. अरूण बोर्दिया, डॉ. महेन्द्र भानावत, प्रो. राजेन्द्र तलेसरा, प्रो. वेददान सुधीर, गणेश डागलिया, डॉ. तुक्तक भानावत, टीनू माण्डावत, डॉ. लोकेश व्यास, मुंबई के हर्षदभाई सर्राफ, दीपक मेहता, तनय मेहता सहित अनेक लोग शामिल थे। शाम 5.30 बजे चौगान के मंदिर में उठावणे में भाजपा के प्रतिपक्ष के नेता गुलाबचंद कटारिया, जैन दर्शन के विद्वान डॉ. देव कोठारी, सजीव सेवा समिति के संस्थापक एवं डॉ. व्यास के प्रमुख शिष्य शांतिलाल भण्डारी, टीआरआई के पूर्व सांस्कृतिक अधिकारी भगवानलाल कछवाहा तथा लोककला मंडल के उपाध्यक्ष रियाज तहसीन सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

डॉ. व्यास लगभग 24 वर्ष तक ट्राइबल रिसर्च इंस्टीट्यूट (टी.आर.आई.) के निदेशक रहे। यहां से उन्होंने ट्राईब पत्रिका प्रारम्भ की। आदिवासी कला, संस्कृति एवं साहित्य विषयक अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया। प्रकाशन सहायता दी। अनेक विद्वानों तथा शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया।

कई अखिल भारतीय संगोष्ठियां, सेमीनार, अधिवेशन तथा कार्यशालाएं आयोजित कीं। स्वयं डॉ. व्यास ने इस क्षेत्र की एक दर्जन से अधिक प्रामाणिक एवं मूल्यवान पुस्तकों का लेखन कर पर्याप्त ख्याति अर्जित की।

डॉ. व्यास के अमृत महोत्सव पर 'आदिम गंध के अध्येता' नाम से सन् 2008 में डॉ. महेन्द्र भानावत के सम्पादन में अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित किया गया। डॉ. व्यास की धर्मपत्नी प्रो. अरूणा व्यास ने प्रारम्भ में उदयपुर के राजस्थान महिला विद्यालय के होम साइंस कॉलेज में समाजशास्त्र की व्याख्याता के रूप में अपनी सेवाएं दीं।

डॉ. व्यासजी गत कुछ वर्षों से नियमित ही संध्या को प्रतिदिन घण्टे-आध-घण्टे के लिए चेटक सर्कल स्थित शब्द रंजन कार्यालय मिलने आते रहे। यहां उनसे अन्य कई विद्वानों तथा शोधार्थियों से भेंट होती रही। उनमें आदिवासी-कला-संस्कृति के भी व्यक्ति थे जिनको व्यासजी से यथोचित मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आदिवासी सम्बन्धी दो पुस्तकें तो व्यासजी और भानावतजी के संयुक्त लेखन के साथ प्रकाशित हुईं। इनमें से एक जनजाति जीवन और संस्कृति पुस्तक का तो लोकार्पण ही उदयपुर के पास के आदिवासी ऊंदरी गांव के लोगों के साथ काला-गोरा देवरे पर किया गया।

डॉ. भानावत द्वारा संस्थापित सम्प्रति संस्थान के गत चार वर्षों से डॉ. व्यास अध्यक्ष थे। उनका स्वभाव बड़ा मृदुल, स्मित हास्य लिये था। वे सदैव उच्च अधिकारी रहे इसलिए बड़े संयमित और मर्यादित रहकर नपेतुले शब्दों में अपनी बात कहने के अभ्यासी थे। टीआरआई में रहते उन्होंने जो संगोष्ठियां डॉ. भानावत के संयोजन में आयोजित कीं उनमें गवरी सर्वाधिक उपलब्धिमूलक और यादगार बनी रही।

इसमें मुख्यत: जोधपुर से कोमल कोठारी, पूना से मालती शर्मा, लखनऊ से डॉ. विद्याविन्दुसिंह तथा कोलकाता से डॉ. शंकरसेन गुप्ता ने भाग लिया।

इस संगोष्ठी की सबसे बड़ी खासियत तो यही रही कि उसमें सर्वाधिक वे आदिवासी लोग आमंत्रित थे जो मेवाड़ के परम्पराजीवी गवरी खेलने वाले थे। संगोष्ठी के प्रारम्भ में गवरी का मंचन रखा गया। उसके बाद संगोष्ठी का शुभारम्भ भी गवरी नायक राईबुढ़िया का स्वांग भरते वरिष्ठ कलाकार से करवाया गया।

उस दौरान जिन विद्वानों ने जो सवाल किये उनका अधिकतर जवाब भी वहां उपस्थित गवरी के खिलाड़ियों द्वारा दिया गया। उनके लिए यह पहला अवसर था जब वे किसी सुव्यवस्थित सभागार में टेबल-कुर्सी और माइक के साथ बिठाये गए।

डॉ. व्यास के निधन पर सम्प्रति तथा शब्द रंजन परिवार की हार्दिक श्रद्धांजलि।

- डॉ. तुक्तक भानावत

उदयपुर प्रवास पर डॉ. संजीव एवं प्रो. कौशल्या

मेरे लिए वे क्षण बहुत ही भावुक थे जब 15 जून को उदयपुर में अपने चाचाश्री डॉ. महेंद्र भानावत के साथ मेरे पिता श्रद्धेय डॉ. नरेंद्र भानावत के सन् 1949-51 में छोटीसादड़ी जैन गुरुकुल में शिक्षक रहे गुरुदेव श्री सागरमलजी बीजावत (जैन) से मिलने उनके आवास पर पहुंचा।

93 वर्षीय श्री जैन साहब ने पिताजी की उस समय की साहित्यिक और शैक्षिणक उपलब्धियों की चर्चा करते बताया कि नरेन्द्र अपने व्यवहार तथा रहन-सहन में जितने साधारण थे उतनी ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। अपने समय में वे गुरुकुल में ही नहीं, विद्यालय में भी सर्वश्रेष्ठ छात्र तथा सर्व लोकप्रिय थे। लगभग सात दशक पुरानी अनेक स्मृतियां जैन साहब के सान्निध्य में जीवन्त हो उठीं। उन्हें मैंने अपने द्वारा संपादित कम्यूनिकेशन टुडे का सद्य प्रकाशित नवीन अंक भेंट किया।

इससे पूर्व शब्द रंजन कार्यालय में काकासा डॉ. महेन्द्र भानाव और भैया डॉ. तुक्तक से लम्बे समय तक पारिवारिक हालचाल तथा घरेलू बातचीत की। मेरे साथ सहधर्मिणी प्रो. कौशल्या भी थीं। इस दौरान काकासा ने अपनी नव प्रकाशित पुस्तकें भेंट कीं। लोककलाओं के विविध पक्षों पर उनकी अब तक 102 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

-डॉ. संजीव भानावत

डॉ. शर्मा को 'डॉ. वाकणकर रजत अलंकरण सम्मान

झालावाड़। भोपाल की कला समय संस्कृति एवं शिक्षा समिति व दशपुर प्राच्य शोध संस्थान मन्दसौर द्वारा 6 जून को पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. वाकणकर जन्मशती वर्ष समारोह में झालावाड़ के इतिहासकार डॉ. ललित शर्मा को 'डॉ. वाकणकर रजत अलंकरण' से सम्मानित किया गया।

शर्मा को यह सम्मान उनके हाड़ौती मालवा के राष्ट्रीय परिवेश में ऐतिहासिक खोज, लेखन तथा प्रकाशन सहित लोगों में इतिहास धरोहर के प्रति जन चेतना व सेवा को देखते हुए प्रदान किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि दशपुर प्राच्य शोध संस्थान मन्दसौर के निदेशक डॉ. कैलाशचन्द पाण्डेय, अध्यक्ष भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (उत्तर भारत) के अधीक्षण पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. नारायण व्यास थे।

पांडवों की बहिन रूपुल का भाग्य-चक्र

-दिनेश रावत-

मध्य हिमालयी क्षेत्र में प्रचलित महाभारतकालीन प्रसंगों में पांडवों के साथ-साथ एक प्रसंग उनकी बहिन से जुड़ा भी है। पांडवों की बहिन को 'रूपुल गिऊणी' नाम से जाना जाता है। उसका विवाह मोरी नारायण के साथ हुआ जो प्रतिष्ठित होने के बावजूद आर्थिक रूप से त्रस्त था।

पति की ऐसी दशा देख रूपुल मायके पहुँची और भाइयों को अवगत करवाने पर उनका ह्रदय द्रवित हो गया। भीम ने बहिन के लिए महल तैयार करने का जिम्मा लिया। भाइयों से कहा, महल इतना आलिशान हो जिसमें कम-से-कम बत्तीस भंडार गृह तथा छत्तीस कौने हों। वह ऐसा सुन्दर हो कि उड़ते बाज एवं मयूर भी मदमस्त हो नृत्य करने लग जायें। भीम के निर्देशन में बहिन के लिए रातोंरात मजबूत, टिकाऊ, आलिशान तथा आकर्षण महल तैयार हो जाता है।

इससे मोरी नारायण की निर्धनता दूर हो जाती है। सब कुछ पर्याप्त है लेकिन रूपुल की कोख सूनी है। संतान न होने की चिन्ता उसे बराबर सता रही है। इधर मोरी नारायण 'सांगला गुजरयाण' नाम की एक गूर्जर युवती के सर्म्पक में आ जाता है। बेहद खूबसूरत होने से वह उससे विवाह भी कर लेता है। इस दौरान मोरी गूर्जरों के सम्पर्क में आ जाता है। योजना बनाकर वह रूपुल को बस्ती से कोसों दूर किसी निर्जन स्थान पर फैंक आता है ताकि किसी को कोई खबर न लगे। संयोग से इसी दौरान रूपुल के गर्भ में एक बच्चा होता है। इससे वह फूले नहीं समाती। वह दिन-रात भाइयों के आने की इंतजार में झाड़ियों के बीच सांसें

गिनती हैं। उसे विश्वास है कि माघ के महीने में तो उसके भाई 'माघी दोफारी' पहुँचाने आयेंगे। जब वह घर पर नहीं मिलेगी तो खोजबीन करते-करते उस तक पहुँच ही जायेंगे।

अंतत: रूपुल एक बालक को जन्म देती है जो पांडवों में भांजा दियासुऊ बाऊ के नाम से जाना जाता है।

सुनसान महल में अचानक किलकारियाँ गूँज उठती हैं। बाजगी कालिदास परम्परानुसार बाल जन्मोत्सव के ताल बजा देता है, जिन्हें सुनकर मोरी उसे मारने को दौड़ता है।

बाजगी जवाब देता है, बाजा क्यों नहीं बजाऊँ ! गमगीन हो तेरी सागला गुजरयाण। रूपुल को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हो गयी है। यह सुन मोरी विचलित हो उठता है। उसे अपनी जान के लिए भी खतरे के संकेत दिखने लगते हैं। वह भिटाण गुजराती को पूरी बात बताता है। वे मोरी को आश्वस्त करते है कि तुम चिन्ता मत करो। हम किसी भी दशा में उस बालक को जीवित नहीं रहने देंगे।

इसी उद्देश्य से वे यज्ञ का आयोजन कर तय करते हैं कि उस दौरान ही धोखे से उस नवजात की बलि चढ़ा देंगे। वे मोरी को समझाते हैं कि यज्ञ के दिन घर के पूरब दिशा की खिड़की खुली रखना। जादूई शक्ति से हम उस बालक को वहाँ से ज़िंदा उठा लेंगे। मोरी ऐसा ही करता है। बुढ़िया गुजरियाण उसके लिए पालना तैयार करने में जुटी रहती है। जैसे ही वे बच्चे को मारने का प्रयास करते हैं, भगवान श्रीकृष्ण अपना चक्र छोड़ते हैं। नवजात उस चक्र पर चढ़ कर वहाँ से अन्यत्र चला जाता है।

देवपुरा सम्मानित

नाथद्वारा। बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में श्यामप्रकाश देवपुरा को 'साहित्य सम्मेलन शताब्दी सम्मान' हरियाणा के राज्यपाल महामहिम सत्यदेव नारायण आर्य व बिहार

हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना के अध्यक्ष अनिल सुलभ ने प्रदान किया।

मुख्य अतिथि त्रिपुरा के पूर्व राज्यपाल प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद, विशिष्ट अतिथि हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के अध्यक्ष प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, तथा केंद्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक नंदकिशोर पाण्डेय थे।

स्मृतियों के शिखर (78) : डॉ. महेन्द्र भानावत

यादों की उपलब्धियों में गोरधन बाबा

भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर के लोककला संग्रहालय में प्रतिदिन सुबह से शाम तक देखने वालों का तांता लगा रहता है। इनमें सभी तबके के लोग होते हैं। ग्रामीण, आदिवासी, छात्र, बड़े नामी, छोटे आदमी, विदेशी तथा देश-विदेश के शीर्षस्थ नेता, कलाविद् और रसिक छैले, सबके सब लोग सरस हो जाते हैं और पुतलियों के खेल की अविस्मरणीय छवि में खो जाते हैं।

इसी संग्रहालय की एक गेलेरी में दीवाल पर आदिवासी भील विवाह की विदाई का एक बहुरंगा अत्यन्त ही कलात्मक चित्र लगा हुआ है। इसके दोनों ओर दो चित्र और हैं। इनमें एक चित्र में पुरुष तथा दूसरे में महिलाएं होली के अवसर पर नृत्य के विविध घेरों में अपने हाथों में कड़ियां-छड़ियां लिए अल्हड़ उन्मुक्त गैर-घूमरा खेलते हुए दिखाये गए हैं।

मैं कई बार देखता हूं लोग इन चित्रों में आंखें गढ़ाये खो जाते हैं। कुछ युवक और बच्चे वहीं नृत्य भंगिमाएं भरते हैं। विदेशी चित्रों पर चित्र खींचते हैं और आदिवासी आनंद मग्न हो गैर के गीतों में फूले नहीं समाते हैं। स्त्रियां घमराती रह जाती हैं। मैं सोचता रह जाता हूं, कैसा सम्मोहन है इन चित्रों में! कितने सजीव और सरस हैं ये! कितने सच्चे और सवालिया हैं ये चित्र! 'बाबा' कितने गहरे हैं! उनका अध्ययन और आनंद कितना अजब-गजब का है। उनकी कलम में कितना करिश्मा, कितनी कसावट और थिरकती रंगीनियां हैं जो समझ-नासमझ सबको रंग देती हैं। कला वही है जो हर मन को हरख देती है। अन्तस का आनंद तब कितना उल्लास और उजास देता है!! मन अंदर ही अंदर तब कितने होठ फड़फड़ाता है!

ये बाबा हैं गोवर्द्धनलाल जोशी। जोशीजी 'बाबा' के नाम से ही जाने जाते हैं। संवत् 1968 की श्रावणी तीज को कांकरोली में जन्मे बाबा के पिता भगवानलालजी जोशी द्वारकाधीश मन्दिर में सेवक थे। झापटियाजी के नीचे काम करते थे। समय की सूचना देना उनका प्रमुख काम था। आरती, भोग, सेवा-पूजा, सोवन, पोढ़ण, दर्शन, जागन आदि सारे के सारे काम समय के अनुसार ही होते थे।

मुख्यत: दीवाली के दिनों में महीने-महीने भर तक मन्दिरों में चितेरों द्वारा भांत-भांत के चितराम कोरे जाते। कृष्ण की विचित्र लीलाओं, गोप ग्वालों, गायों, हाथियों, पुतलियों, द्वारपालों को विविध चित्रों में मंदिर के प्रवेशद्वार से लेकर अन्य द्वार-दीवारें दर्शनार्थियों के चित्त चोर लेतीं। चित्रकारी की समग्र सामग्री भी भगवानलालजी के पास रहती।

बाबा मंदिर पहुंचते। ये सारी चीजें देखती उनकी बाल-आंखें और मन ही मन ताजगी, एक मस्ती और आनंद की अनुभूति लिए बड़ी हो जातीं। बाबा सोचते, इतने सुन्दर चितराम मैं भी सीख लूं तो कितना आनंद आ जाये और उनकी जिज्ञासा उन्हें अपने पिता की ओर ले चलती जहां उनसे टूटे-फूटे तूंतड़े निकले ब्रश, टूटी-फूटी काचली और सूखे तड़के रंग का प्रसाद प्राप्त होता। घर जाकर बाबा उनसे कभी आले, कभी दीवालें तो कभी कागज-पाटी बिगाड़ते और फूले नहीं समाते।

बचपन कई शौक चरता है। वह बंधा हुआ नहीं रहता। बड़ा उन्मुक्त और स्वेच्छाचारी होता है। बाबा को इधर ब्रश हाथ लगा तो उधर एक अखाड़ा भी। अखाड़े में दासाभिया (दामोदर गूजर)अच्छे अखाड़ची थे तो अच्छे चित्रकार भी। बाबा उनकी अच्छी दोस्ती में आ गए। उनके घर जब वे देखते कि दासाभिया रंगकोरी में भी उस्ताद हैं तो वे भी एक दिन अपना तूंतड़ा सा ब्रश और तड़काई काचली ले गए। दासाभिया ने उनको अच्छा ब्रश और रंग दिया और कागज मांडने को कहा। ग्यारह वर्ष का बाबा चित्रों में अपनी निगाह गड़ाता, ब्रश की अंगुलियां चलाता तथा दासाभिया के रंग घोटता। उनका कसरती शरीर रंगों की विविध रूपावलियों में रंग-दंग जाता।

कलाप्रेमी पिता अपने बेटे की कलाप्रियता से प्रसन्न होते। वे ब्रश, रंग और वह सब कुछ जुटाते जिससे बाबा को किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं लगता। उनके लिए ब्रश रंग के अलावा अच्छे कागज भी कबाड़े गए और उन पर बिना रंग के सूखे चित्र बनाने को कहा जाता। बाबा फटाफट उन पर एकांतरे के पुतले खींच देते। लगन से कुछ ही दिनों में उनकी अंगुलियां अच्छी सफाई में आ गईं।

उन्हीं दिनों एक महाजन को अपनी दुकान का मुर्हूत करना था। जब उन्होंने सुना कि भगवानलालजी का लड़का भी होशियार हो गया है तो वे अपनी दुकान पर बाबा को लाभ-शुभ और लक्ष्मीजी मांडने ले गए। बाबा ने ऐसा बढ़िया काम किया कि महाजन की तबीयत खुश हो गई। उसने बाबा को पांच रूपये बतौर दक्षिणा दिये। बाबा के घर में खुशियां छा गई। तब पांच रूपये तो भगवानलालजी की महीने भर की तनख्वाह थी। मां और बापू ने जब पहली बार अपने बेटे में हीरा और रतन देखा तब उन्हें कितनी खुशियां हुई होंगी! कइयों के प्रेरक शंभु दादा (शभुंलालजी शर्मा) की प्रेरणा भी बाबा को प्राप्त हुई। वे उन्हें उदयपुर ले आए। यहां चित्रकला की परीक्षा में बाबा सर्वप्रथम रहे। सातवीं में भर्ती किये गए परन्तु परिस्थितिवश 8वीं नाथद्वारा में पढ़नी पड़ी।

यहां सुप्रसिद्ध चित्रकार घासीरामजी से बाबा का परिचय हुआ। इनकी प्रतिभा को देख घासीरामजी ने इन्हें अपने यहां सीखने के लिए कह दिया यद्यपि उन दिनों अन्य जाति वालों को अपनी कला सिखाना वर्जित था। छुट्टियों में दिन भर वहीं रहते। भिंडी, तुरई जैसी सागभाजी कभीकभाक बतौर दक्षिणा के रूप में ले जाते और दिन भर पाटी पर चित्र कोरने का अभ्यास करते। तब लकड़ी की पाटी चलती थी। उसी पर मुल्तानी मिट्टी पोत कर ब्रश द्वारा काली स्याही से चित्र बनाते। कोई चित्र गलत हो जाता तो उस पर मुल्तानी फेरी कि पाटी साफ हो जाती और दूसरा चित्र उभार लिया जाता। घासीरामजी ने एक ही गुरु-मंत्र दिया- 'हाथी, हाथ और घोड़ा, बाकी सब थोड़ा-थोड़ा।' यदि हाथी, हाथ और घोड़ा ठीक मांडना आ गया तो वह चित्रकार बन गया समझो। दूसरी चीज तो वह स्वयं अपनेआप ही सीख जायेगा।

कहना नहीं होगा कि घासीरामजी से बाबा को व्यावहारिक शिक्षा मिली जिसे चित्रकला की मूल भित्ति-पकड़ कहा जा सकता है। नाथद्वारा भी बाबा अधिक नहीं रह सके और पुन: उदयपुर आकर अपनी पढ़ाई प्रारंभ कर दी। उन्हीं दिनों जब बाबा दसवीं पास हुए, विद्याभवन में चित्रकला अध्यापक की आवश्यकता हुई। शंभुदादा विद्याभवन के संस्थापक डॉ. मोहनसिंह मेहता के पास बाबा के रेखाचित्र ले गए। डॉ. मेहता उन चित्रों से अत्यधिक प्रभावित हुए और दूसरे ही दिन से विद्यालय में बाबा की सेवाएं प्रारंभ हो गई। यह बात सन् 1931 की है जब विद्याभवन प्रारंभ हुआ ही था। तब से लगातार बाबा यहां अपनी सेवाएं देते रहे। यहां 44 वर्ष रह कर बाबा सन् 1975 में सेवानिवृत्त हुए।

विद्याभवन ने बाबा को अपनी कला निखारने का अच्छा वातावरण दिया। समय-समय पर आयोजित वनशालाओं में बाबा वनवासियों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन में खो जाते। उनके घरों में घुस जाते। खेत-खलिहानों में चले जाते। उठते, बैठते, नाचते, गाते और उनकी प्रत्येक हरकत, थिरकन को आत्मसात करते। उनके बच्चों को भूंगड़े, भीलों को तमाखू और भीलनियों को गुड़ बांटते। उनके मेले-ठेले देखते। शादी-विवाह में भाग लेते और प्रत्येक त्यौहार, उत्सव और मांगलिक अनुष्ठान को जीते हुए हर क्षण-पल को चित्रित करते।

उन दिनों उदयपुर में कर्नल डोंट थे। उनकी पत्नी भी बहुत अच्छी चित्रकार थी। एक दिन डोंट साहब ने बाबा से कुछ रेजी मेंटल फ्लेग बनवाये। इनसे वे अत्यंत प्रसन्न हुए। बाबा को कुछ चित्रों के साथ अपने घर आमंत्रित किया। बाबा पहुंचे। उन्होंने चित्रों का पारिश्रमिक पूछा। बाबा संकोच में पड़े। वे आठ रूपया बताना चाहते थे पर उन्हें डर था कि कहीं ये रूपये अधिक तो नहीं हैं। अत: चुप रहे। तब डोंट साहब ने उन्हें 6400 रूपये दिये जबकि बाबा की कुल तनख्वाह ही आठ कलदार और आठ चित्तौड़ी थी। बाबा का उत्साह द्विगुणित हुआ। उनकी कलायात्रा आगे से आगे चलती रही।

डॉ. मेहता बाबा की यह बढ़ोतरी चुपचाप देख रहे थे। उन्होंने मन ही मन तय कर लिया कि उन्हें और अच्छी जगह भेजना चाहिये और इसके लिए उन्होंने शांति निकेतन को बहुत ही उपयुक्त समझा। फलत: वर्ष भर के लिए बाबा शांति निकेतन भेज दिये गए। यहां रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, नंदलाल बसु तथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी जैसे दिग्गजों का सान्निध्य-आशीर्वाद प्राप्त कर बाबा की कला को कई चांद चढ़े। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने इनके चित्रों को देखकर ठीक ही कहा था कि यदि चित्रकार बनना हो तो अपनी भूमि और अपने आदमियों में घूमो-फिरो, हिलो-मिलो और उनके हो जाओ।

शांति निकेतन में नाटकों की रिहर्सल और उनका मंचन प्राय: चलता ही रहता था। चित्रांगदा के रिहर्सल की एक अविस्मरणीय घटना का उल्लेख बाबा प्राय: करते रहते। उनका एक कमरा-साथी था रत्नाकर जो चित्रांगदा में तबला बजाया करता था। बाबा ने रिहर्सल देखनी चाही तब रत्नाकर ने बाबा को तबला पकड़ा कर बिठा दिया। थोड़ी देर बाद एक ठिगना सा व्यक्ति बाबा के पास आकर बैठ गया जो बंगाली धोती, आसमानी खड़ी लकीर वाला गंदा कमीज पहने था। उसके हाथ में एक टूटी छतरी तथा मुंह में एक छोटी सी बीड़ी धुंआ दे रही थी।

वह व्यक्ति बाबा के बिल्कुल पास भीड़ गया। बाबा को धुंए से परेशानी हुई फलत: उन्होंने अपने हाथ की कुहनी मारना प्रारंभ कर दिया। दो-चार कुहनी मारी परन्तु उस व्यक्ति पर कोई असर नहीं पड़ा। वह बड़े तल्लीन भाव से रिहर्सल देखता रहा। रिहर्सल समाप्त होने पर बाबा ने जब रत्नाकर से उस व्यक्ति को बुरा-भला कहा तो रत्नाकर ने जोर से ताली पीटी, ठहाका भरा और कहा कि जोशीजी जिन पर आप इतना बिगड़ रहे हैं वे थे शरत बाबू। जोशीजी शरतचंद्र चट्टोपाध्याय का नाम सुनते ही पता नहीं कहां किसमें खो गए।

तब प्रसिद्ध कलाकार देवीलाल सामर भी विद्याभवन में थे और नृत्य-नाटिकाओं के अपने प्रयोग कर प्रदर्शन देते रहते थे। बाबा भीलों के साथ रहकर नृत्य भी कर लिया करते थे। अच्छा अभ्यास भी उन्हें हो गया था फलत: सीताहरण में सामरजी ने उन्हें चार पात्रों का नृत्याभिनय दिया जिसके प्रदर्शन बाबा ने बखूबी निभाये। निभाये ही नहीं, सर्वत्र प्रशंसा भी अर्जित की। इन्हीं दिनों विद्याभवन में मिट्टी के मॉडल बनाने का काम भी जोरों पर था।

-शेष पृष्ठ सात पर

गोरधन बाबा द्वारा बनाया गया गवरी नृत्य का चित्र

शब्द रंजन
उदयपुर, शनिवार 15 जून 2019

सम्पादकीय

घी की तासीर सूंघने में

घी शुद्ध है या भेलमेल किया हुआ है, इसकी परख उसके दिखाई देने से नहीं होती। उसे सूंघने से होती है। सूंघने वाले उसकी खुशबू से घी की शुद्धता तथा गुणवत्ता की पहचान कर लेते हैं। ऐसी ही पहचान इस बार मतदाताओं ने सरकार की की है।

सबको लग गया कि अचानक ही सही, भारत का मतदाता अपने ढंग का आनंद दाता, वोट दाता बन गया है। अब उसकी जी हजूरी करने या बहकावे या प्रलोभन देने से काम नहीं बनने का है। यह एक तरह से करिश्मा ही हुआ कि अब तक जो जातिवाद, वंशवाद, थैलीवाद या प्रभुत्ववाद का शंख बजाकर ध्वनि निकालते रहे, उसका असर थोड़ा-बहुत भी नहीं हुआ। सबके सब ऐसा सोचने वाले, अपने बड़े नेता होने का दमखम भरने वाले धराशायी हो गए।

जनता ने तेल भी देखा और तेल की धार भी देख ली। यही नहीं, अपने धैर्य के बल पर उसने वह असंभव होती कहावत भी संभव कर दी जब उसने नौ-मन तेल भी देखा और उस पर राधा को नाचती-ठुमकती भी देख लिया किंतु उसे तो नौ-मन की जगह नो-मन अर्थात् 'मन नहीं' का पाशा पलटना था। लगा, अब मतदाता को उस गाय की तरह हेंडल नहीं किया जा सकता जिसकी पीठ पंपोलने या जिसे अच्छा खासा बांटा खिलाने पर भी वह उनकी मनमर्जी का दूध दे दे। पुरानी वह कहावत भी इस बार चरितार्थ हुई लगी जिसमें एक लोमड़ी कौए का गुणगान करती उसे रिझाती है तब भी कौआ उसके प्रशंसा-बोल से प्रभावित होकर उसके मुंह का रोटी का निवाला उसे देने की भूल नहीं करता है बल्कि अपने पास रखे ट्रांजिस्टर से अपनी मनमर्जी का गाना सुन लोमड़ी को ही चलती कर देता है।

हकीकत में मतदाता एक भिन्न तरह से जागरूक, समझवाला तथा पुराने ढर्रे से चली आ रही राजनीति का शिकार नहीं होकर व्यक्ति-प्रमुख को नहीं, राष्ट्र को प्रमुख समझनेवाले और उसके लिए सचमुच में समर्पित भाव से कर गुजरने के संकल्पवान को विश्वसनीय समझकर राष्ट्र की बागडोर उसके हाथ सौंपने का यथार्थ निर्णय लेने को प्रतिबद्ध हो गया था। यह परिपक्व और भरोसा करने तथा उसमें सफल होने की समझ पहले कभी नहीं देखी गई इसलिए विपक्ष के वे सारे नेता बुरी तरह पराजय का मुंह देखते रह गये।

अब तक पार्टी-प्रमुख महान थे पर अब जनता महान हो गई है। यह भी रहा कि जो जनता अब तक वंशवाद के राजा-महाराजा या राजकुमार-राजकुमारी या कुंवरानी को देखने के लिए उमड़ पड़ती थी, इस बार वे चेहरे भी अपनी करिश्माई का कमाल दिखाने में असफल रहे। विरसती लाड़ले भी अपनी विरासत नहीं हथिया पाये। उनकी जागीरें भी जब्त कर ली गई। यह भी लगा कि आजादी के बाद जो भारत बना वह अब पुराना ढर्रे वाला बन गया है। उसमें वह चमक तथा दमक नहीं रही सो जनता उसकी बजाय नये भारत की तस्वीर देखना नहीं, देश के अनुरूप जनभावना की चाह के अनुसार बदले हुए देखना चाहती थी। धुंधले आईने में अपना धुंधलाता उणियारा देखते-देखते जनता के स्वप्न निराकार होते लग रहे थे इसलिए पूरा देश नामधारी नरेन्द्र की बजाय कामधारी नरेन्द्र को सत्ता की बागडोर सौंपने के लिए भीतर से दृढ़ प्रतिज्ञ थी।

अपने पिछले कार्यकाल में नरेन्द्र भाई सचमुच में नर-इन्द्र नरेन्द्र साबित होते लगे थे। मात्र पांच वर्ष इतने बड़े राष्ट्र की इतनी पुरानी धूल को झाड़ने और उसकी बजाय उसे चमकाने और नया कुछ कर दिखाने के लिए पर्याप्त नहीं थे सो नव भारत के निर्माण के लिए इस बार की ताजपोशी भी उनके नाम कर दी। अब परीक्षा का पाला नरेन्द्र मोदी के पास है।

'टोयोटा ग्लांजा' लॉन्च

उदयपुर। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) द्वारा गुरूवार को

उदयपुर में राजेन्द्र टोयोटा पर 'टोयोटा ग्लांजा' प्रीमियम हैचबैक की पेशकश की गई। इसकी एक्स शोरूम उदयपुर की कीमत जी एमटी की 7,28,800 रूपये, वी एमटी की 7,67,800 रूपये, जी सीवीटी की 8,36,800 तथा वी सीवीटी की 8,99,800 रूपये है और यह कैफे व्हाइट, स्पोंटिन रेड, इंस्टा ब्लू, गेमिंग ग्रे तथा एनटाइसिंग सिल्वर रंगों में उपलब्ध है। लॉन्च इंडियन मेडिकल सोसायटी के जनरल सेक्रेट्री डॉ. आनंद गुप्ता, टोयोटो किर्लोस्कर मोटर के कॉर्पोरेट सेल्स मैनेजर अनीश गुप्ता तथा राजेन्द्र टोयोटा के उपाध्यक्ष विनयदीपसिंह कुशवाह ने किया।

अनीश गुप्ता ने कहा कि इस प्रीमियम हैचबैक को युवाओं की आवश्कताओं को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। नई ग्लांजा अंदर से भी उतनी ही स्टाइलिश है जितनी बाहर से। इसकी शानदार और आरामदेह डिजाइन ऐसी है कि सफर करने वाले को थकान कम महसूस होती है। इसका भव्य और अपनी तरह का अकेला डुअल टोन इंटीरियर है।

पोखरना शब्द रंजन के सहयात्री बने

कानोड़ निवासी श्री सवाईलाल पोखरना तेरापंथ धर्मसंघ के प्रमुख श्रद्धावान श्रावक हैं। तेरापंथ के नवम आचार्यश्री तुलसी फिर आचार्यश्री महाप्रज्ञ और वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण की महती

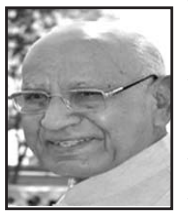

कृपा और आशीर्वाद पाकर समाज की अनेक धार्मिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा हितकारिणी संस्थाओं की स्थापना, विकास तथा पोषण में उनका गहरा जुड़ाव एवं योगदान रहा है।

उनका मानना है कि जो व्यक्ति जितना अधिक नैतिक, सदाचारी तथा सादा जीवन लिये होगा वही सर्वाधिक सुखी एवं संतोषी मिलेगा। भौतिकता की चकाचौंध में जो व्यक्ति अपने को अन्यों से श्रेष्ठ समझने की भूल करता है वह सच्चा धार्मिक और अन्यों के लिए आदर्श नहीं बन सकता।

डॉ. धींग गोल्डन बुक में शामिल

चैन्नई। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग का नाम गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया। उनकी उपलब्धियों पर सबसे लंबी हस्तलिखित कविता डॉ. ललिता बी. जोगड़ ने 1311 पंक्तियों में लिखी। इस श्रेणी में डॉ. धींग यह गौरव पाने वाले प्रथम गृहस्थ हैं।

परीक्षा परिणाम

राजसमंद। दसवीं बोर्ड परीक्षा में बाल निकेतन गांधी सेवा सदन की तीन छात्राओं कृति त्रिपाठी, हिमांशी जोशी तथा लताशा कुमावत ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

हरीश को श्रद्धांजलि

जयपुर। जैसलमेर के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोकनर्तक हरीश एवं उनके दल के सदस्यों

का सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन होने पर वीणा कला अकादमी संस्थान के अध्यक्ष के. सी. मालू ने गहरा शोक व्यक्त किया है।

श्री हरीश ने घूमर, चरी, कालबेलिया, चकरी, भवाई आदि नृत्यों में सदैव महिला कलाकार की भूमिका में पर्याप्त यश अर्जित कर राजस्थान के गौरव को पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन 01 मई 2019 के अंक में भावभरा 'हथेली पर उगते चांद सा नवल-धवल उदयपुर' आलेख कई तरह की नवीन जानकारी लिए है। 'बुधसिंह की चुनावी सभा' करारा व्यंग्य लिए है। मुझे भी पं. जनार्दनराय नागर, देवीलाल सामर से आशीर्वाद मिले हैं। चुनावी सभा का विवरण जब पड़ोसी कवि ने पढ़ा तो उसने रहीम और दादू के नाम से दस-दस दोहे लिख सुनाये। इन्हें मैं भेज रहा हूं। **-दीनदयाल ओझा, जैसलमेर**

रहिमन मांगत वोट

रहिमन मांगत वोट नित, कह पितु मातु'र भ्रात।
जीतन पर वे ना करै, भूल प्रेम सों वात।।
रहिमन मांगत वोट नित, घर-घर हेत जतात।
जीतन पर वे ही धरै, सदा पीठ सिर लात।।
रहिमन मांगत वोट नित, हंस-हंस भर मन चाव।
जीतन पर वे ही सरै, तन मन विध-विध आव।।
रहिमन मांगत वोट नित, निज पण हद दरसाय।
जीतन पर नर एक भी, मिळै न मन हरखाय।।
रहिमन मांगत वोट नित, भूल सीत अर ताप।
जीतन पर देवे सदा, नित नव दुखदा शाप।।
रहिमन मांगत वोट नित, दोय हाथ नित जोड़।
जीत्यो पर ऊले सदा, तन मन मुखड़ो मोड़।।
रहिमन मांगत वोट नित, बदल-बदल नित चाल।
बहुमत पाय'र मनख री, खेंचे बहुविध खाल।।
रहिमन मांगत वोट नित, रूड़ो कर नर हेत।
बहुमत पायो वे दिखे, जाणे ऊलो प्रेत।।
रहिमन मांगत वोट नित, कर-कर रूबल अनेक।
बहुमत पायो ना करै, वादो पूरा अेक।।
रहिमन मांगत वोट नित, गाय-गाय गुण गीत।
बहुमत पायो अेक भी नहीं मिलावे प्रीत।।

दादू बहुमत हेर मत

'दादू' बहुमत हेर मत, मन चित्त सुमत चितार।
सुमत बिना बहुमत जगत, नरसी विकट विसार।।
'दादू' बहुमत घण, भांत-भांत रा रंग।
तू भोळो साचो मनख ढळ न सकै उण ढंग।।
'दादू' मत-गत लेख मन, मत बहुमत रा हाल।
जीत्यो नहीं चितारसी, हार्‌यो बुरा हवाल।।
'दादू' क्यूं फंदे फसे, जीत्या रा रस चाख।
डिग पड़सी इण असद पथ, उड़सी अर्जित साख।।
'दादू' क्यूं सत पथ तजे, क्यूं मत रस दिस जाय।
कयसी मत हीणो मनख, लुक छिप बोल बताय।।
'दादू' तूं यूं फिसल मत, देख चुनाव जीत।
सुमत सार नित अडग रय, पाळ राम सूं प्रीत।।
'दादू' चाल चुनाव री, तूं ना समझे अेक।
जे इण पथ चलतो रयो, बद कयसी नर नेक।।
'दादू' नवलो नेह कर, मांगै जबरा वोट।
ना देखे मत देणिया, वां मन कितरी खोट।।
'दादू' छळिये जगत री, तूं ना समझे रीत।
पा बहुमत कितरी करै, पग-पग धाप अनीत।।
'दादू' नित परखी लगा, परख चुनावी धान।
कितरो आछो माल है, फिर खरीद धर ध्यान।।

इंटरनेशनल ओलिंपियाड में उदयपुर के छात्रों का परचम

उदयपुर। साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन द्वारा आयोजित इंटरनेशनल ओलिंपियाड 2018-19 में उदयपुर के छात्रों ने इंटरनेशनल रैंक हासिल कर शहर का नाम रोशन किया।

इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलिंपियाड में, क्रॉस रोड्स स्कूल से कक्षा एक के छात्र रेयांश अग्रवाल और नेशनल साइबर ओलिंपियाड में, नित्यांश सक्सेना को इंटरनेशनल रैंक एक हासिल करने पर गोल्ड मैडल, सर्टिफिकेट, इंटरनेशनल इंग्लिश ओलिंपियाड में, सेंट्रल अकेडमी सीनियर सेकेंडरी स्कूल कक्षा एक के छात्र कुक्कुक कलासुआ को इंटरनेशनल रैंक दो हासिल करने पर सिल्वर मैडल, सर्टिफिकेट से सम्मानित किया।

फाउंडेशन द्वारा दिल्ली में 2018-19 में बेहतरीन प्रदर्शन करने वालें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इंटरनेशनल रैंक एक पाने वाले 60 छात्रों को 50-50 हज़ार रूपये और गोल्ड मेडल, दूसरे स्थान पर रहने वाले 60 छात्रों को सिल्वर मेडल और 25-25 हज़ार तथा तीसरे स्थान पर रहने वाले 60 छात्रों को ब्रोंज मेडल और 10-10 हज़ार की राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

पोथीखाना

जनजातीय संस्कृति का लोकनायक रामा भील

डॉ. पूरन सहगल लोकसाहित्य के स्वयंसेवक एवं आराधक हैं। उनके लिए लोक, लोकसाहित्य एवं लोकभाषा ही त्रिदेव हैं। उनके लिए आंखन देखी और कागज लेखी के साथ-साथ कानन सुनी, गुनी और समझी का महत्त्व सबसे अधिक है।

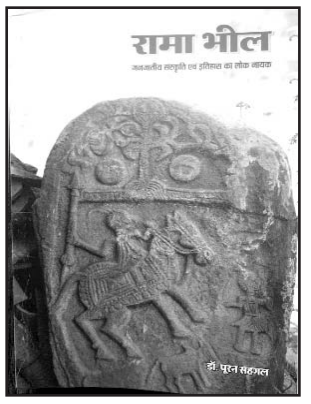

इस गाथा में लगभग सौ वर्ष का गुप्त और सुप्त इतिहास समाया हुआ है। भील सत्ता-संस्कृति को इतिहासकारों ने जिस प्रकार उपेक्षित कर अभिजात्य मानसिकता का परिचय दिया था, उसे डॉ. सहगल ने खण्डित कर इतिहास के उस युग के रीते पड़े पृष्ठों पर एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज दर्ज कर दिया है।

रामा भील अपने युग का उद्‌भट योद्धा था। उसके साथी काटार्‌या, रगत्या, उसकी बेटी जालकी, बेटा जालक, वीरांगना ताखली जैसी अनेक वीरांगनाओं और वीरों का यशोगान करती हुई यह गाथा एक सलिला की भांति मालवा को ही नहीं, अपितु समूचे आदिवासी अंचल को प्लावित करती है।

आदिवासी लोक को समझना और अभिव्यक्त करना सहज नहीं है। इसके लिए लोकमय एवं लोकजय होना पड़ता है। ऐसा वही कर सकता है जो डूबने से डरे बिना गहरी गोत लगाने का अभ्यासी हो। किनारे बैठा-बैठा कोई भी व्यक्ति लोक में से उसके हालचाल नहीं जान सकता। लोक अनंत और अगम है। यह एक रत्नाकर है। 'जिन डूबा तिन पाइया।' डॉ. सहगल ने यह कर दिखाया है। वे डूबने से कभी भी नहीं डरे और गहरी गोत लगाकर रत्न-मणियां निकाल लाए। यह कृति इसी संकल्प-शक्ति एवं गहरी गोत का ही प्रतिफल है। जनजातियों में इसका स्वागत होना चाहिये।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

एक ऐतिहासिक व्यक्ति अपने कर्मों से लोक पूज्य देवता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है बशर्ते कि उसका जीवन लोक-कल्याण के लिए समर्पित रहा हो। ऐसा ही चरित है रामा भील का जो एक महान योद्धा, कुशल शासक, प्रजा-पालक और भील समुदाय की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहता था। इसी का परिणाम यह हुआ कि अपने जीवन काल में ही वह किंवदंती के रूप में स्वीकार किया जाने लगा।

- अशोक मिश्र

अनेक गाथाओं की तरह यह गाथा भी मुझे 'आगम' से प्राप्त हुई, ऐसा मैं मानता हूं। जिस प्रकार वेद आगम हैं और चिरकाल तक ऋषि-कण्ठों पर पोषण एवं संरक्षण पाते रहे, उसी प्रकार यह गाथा भी लोक सृजित है। भले ही इसके सर्जक का नाम भी जुड़ा है किन्तु जब यह लोकाधारित हुई होगी, तब लोक ऋषियों के कंठानुकंठ इसमें अनेक आवश्यक परिवर्तन भी हुए होंगे। लोकसाहित्य जीवित वृक्ष की तरह होता है।

उसमें पतझड़ और वसंत दोनों आते हैं। ऋतुचक्रों से वह नहीं बच सकता। लोकसाहित्य न तो जड़ है न सूखा ठूंठ। उसमें प्राण मौजूद हैं। यह गाथा रामा भील तथा उस काल के जुझारू लोक नायिकाओं की उनके जुझारूपन का वन्दन करती हुई उनका यशगान करती है साथ ही उस काल के इतिहास का पुनरावलोकन एवं पुनर्वास का सन्देश भी देती है।

- डॉ. पूरन सहगल

यह गाथा भील सत्ता एवं संस्कृति का प्रामाणिक एवं परिपक्व विवरण प्रस्तुत करती है। गाथा के पूर्व भाग में लोक, लोकसाहित्य एवं आदिवासी समुदायों की मिथ आधारित उत्पत्ति एवं विकास का तथा सांस्कृतिक वैभव का भी वर्णन किया है जो अत्यंत महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। गाथा के विशिष्ट खण्ड में भी भील वीरों-वीरांगनाओं एवं आदिवासी समुदाय की आदिम संस्कृति पर विशद् वर्णन इस कृति को अत्यंत महत्त्वपूर्ण बना देता है।

- डॉ. प्रद्युम्न भट्ट

आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी भोपाल से प्रकाशित 178 पृष्ठ की यह कृति 50 रूपये मूल्य की है।

साध्वीप्रमुखा का यात्रा साहित्य

साध्वीप्रमुखा श्री कनकप्रभा एक जैन साध्वी हैं। जैन साध्वी की अपनी मर्यादाएं होती हैं। गृहस्थ की तरह उनमें खुलापन या स्वच्छन्दता नहीं रहती है, फिर उन्होंने अपने गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के साथ रहते हुए देश के विभिन्न अंचलों की किसी वाहन से यात्रा नहीं करके पदयात्राएं की हैं। सम्बन्धित अंचल की अच्छाइयों के साथ-साथ उस अंचल में व्याप्त मानवीय एवं सामाजिक बुराइयों से भी सीधा व सम्यक् परिचय प्राप्त होता है।

साध्वीप्रमुखा ने सहयात्री बन कर आचार्य तुलसी के साथ-साथ यात्रा के अनन्तर जो अनुभव किया है, उसमें हिन्दी के यात्रा-साहित्य को समृद्ध किया है।

सच तो यह है कि यात्रा करते समय साध्वीप्रमुखा ने जो कुछ देखा, भोगा, परखा है उसके साथ ही यात्रा से सम्बन्धित क्षेत्रों की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थितियों, वहां की लोकभावनाओं, मानवीय समस्याओं और मानवीय मूल्यों की भी उन्होंने बहुत गहराई के साथ पड़ताल की है। इस पड़ताल से उत्पन्न संवेदनाओं और अनुभूतियों को उकेरते हुए जिस भाव, भाषा और शैली के माध्यम से उन्होंने जो लालित्य प्रदान किया है, वह सचमुच में सर्वप्रकारेण वंदनीय व अभिनंदनीय है।

डॉ. धर्मनारायण भारद्वाज द्वारा प्रस्तुत यह अध्ययन सात अध्यायों तथा कई शीर्षकों एवं उपशीर्षकों में विभाजित है। उन्होंने पूरी निष्ठा, लगन व समर्पण भाव से सर्वांगपूर्ण अध्ययन करने में किसी तरह की कमी नहीं रखी है। उनकी विषय पर पूरी पकड़ तथा प्रस्तुति में सहजता के साथ-साथ गंभीरता है। उदयपुर के हिमांशु पब्लिकेशन्स द्वारा प्रकाशित 400 पृष्ठीय इस सजिल्द पुस्तक का मूल्य 995 रूपये है।

- डॉ. देव कोठारी

कला समय का विशेषांक

भोपाल से प्रकाशित द्वैमासिक 'कला समय' का हर अंक ही कला-समय का चितेरा बन धनुषित हुए बड़े सलीके से पाठकों तथा कला-रसिकों की नब्ज पर सवार बना मनानंद-घनानंद किये रहता है।

फरवरी-मार्च 2019 के ताजे अंक के आवरण के आगे-पीछे के डॉ. रेखा भटनागर के चित्र कला की अनेक अबोल कनखियां लिये सुलोचित हैं वहीं आवरण का पार्श्व डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' की काव्य-धड़कन; वास्तु-सिद्धांतों से ही निराली बन निखरी है। उनकी कविता में 'आखर को अधर से रंगने, नख बरन का कागज लेकर बिन ढक्कन का पेन उठाकर खत लिखने तथा जीभ घुमाकर चिपकाने का मन करने' जैसे कड़ावे हिंदी काव्य-मंजूषा में जैसे अभिनव मोती बन लालम लाल बने हैं।

इस अंक में रंगमंचीय हलचल को लेकर दयाप्रकाश सिन्हा से संपादक श्रीवासजी की लंबी बातचीत तब से लेकर अब तक के रंगमंच से जुड़े रंगकर्मियों और मंचधर्मियों पर पारदर्शी प्रभाव लिये है। सिन्हाजी ने छेड़ा किसी को नहीं किन्तु छोड़ा भी नहीं है। उल्लेखनीय यह ठीक ही कहा- 'फिल्म में आदमी अपने आकार से बहुत बड़ा, टेलीविजन में बहुत छोटा लेकिन थियेटर में अपने कद में दिखाई देता पड़ता है।'

एक बड़े इशारे में उन्होंने कान्यो मान्यो कुर्र कर कह दिया- 'बहुत से लोगों को जानता हूं जो अनुदान प्राप्त करने की कला में प्रवीण होते हैं। थियेटर में नहीं होते, कला में नहीं होते, मगर वो भी अनुदान ले लेते हैं और उनको काफी अच्छे अनुदान भी मिलते हैं। कलाकारों को राशि बहुत कम मिलती है। फोकस इस बात पर है कि कितना पैसा बचाया जा सके। इस बात पर नहीं कि अधिक से अधिक दर्शकों को लाकर उनके सहयोग से नाटक करें।'

आज के समय में छोटे सम्मान तो इधर-उधर जैसे कुकुरमुक्तों की तरह फैले हुए हैं पर बड़े सम्मानों पर भी यदाकदा ऊंगली टेढ़ी होती लगती है। ऐसे में सिन्हाजी ने कठोर-कटु बड़ी निर्भयता के साथ सम्मान का धंधा करने वालों की नकेल खींची और यह ठीक ही कहा- 'सम्मान की बिना दौड़ के ही सम्मान मिलते हैं तब तो सम्मान है। दौड़ में तो सम्मान, सम्मान ही नहीं रह जाता।' अशोक वाजपेयी पर मुकेश कुंदन थामस का संस्मरणात्मक आलेख भी इस अंक की उपलब्धि है। वाजपेयीजी से पहलीबार जब वे भारत भवन में थे तब राजस्थान साहित्य अकादमी की ओर से 2-3 नवंबर 1985 को लेखकों का जो प्रतिनिधिमंडल भोपाल गया, उसमें नंद चतुर्वेदी, ऋतुराज, विजेन्द्र, डॉ. जयसिंह 'नीरज', डॉ. रमासिंह, डॉ. हेतु भारद्वाज, विश्वंभरनाथ उपाध्याय, डॉ. नवलकिशोर के साथ मैं भी था।

सचिव डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना ने बताया कि तब भारत भवन में डॉ. वाजपेयी ने जो भावभीना स्वागत किया और साहित्यकारों के दायित्व पर जो उद्‌बोधन दिया वह वर्षों तक चर्चा का केन्द्र बना। यहीं दो दिनों के साहित्यिक समागम में मुख्यत: हरिनारायण व्यास, त्रिलोचन शास्त्री, पूर्णचंद रथ, डॉ. रामदत्त आदि से सार्थक संवाद रहा। इस बीच हमने सांची का स्तूप भी देखा। लौटते समय कुछ देर देवास में गीतकार नईम के घर काव्य-गोष्ठी का जो आत्मीय आनंद उमड़ा उसे कई दिनों तक स्वयं नईम भी बड़ी आत्मीयता के साथ अमिट उपलब्धि बताते रहे। अब तो वे बातें भूलीबिसरी सी हो गई हैं जब स्वयं नईम और कई साथी स्मृतिशेष हो गए हैं। अन्य रचनाओं में संगीता सक्सेना का अमीर खुसरो का भारतीय संगीत में योगदान, माधवी नावल का आश्रम भजनावली का सुनहरा इतिहास, राधेलाल बिजघावने का लोककलाओं के अस्तित्व बोध की चिंताएं तथा डॉ. उर्मिला शर्मा का किशनगढ़ चित्रशैली आलेख भी कम उपयोगी और पठनीय नहीं है।

- म. भा.

जब हम न रहेंगे तब.....

- डॉ. रेखा व्यास -

सबके पिताजी, दादाजी, माताजी इत्यादि अक्सर कहते थे या कहते हैं कि हमारे टेम पे दो पैसे का घड़ा भर दही आता था। एक आने की छबड़ी भर जलेबियां और ऐसी ही तमाम चीजें। वो समय भले ही कितना तंग और बोझिल हो अतीत उसे सहेजने लायक धरोहर बना देता है।

जब तक कोई 'अतीत' वर्तमान रहता है तब तक उससे सबको शिकवा-शिकायत रहती है। जब वो भविष्य होता है तो बहुत अपेक्षाओं का शिकार रहता है। वर्तमान से उसकी दूरी कम होती है। यही कारण है कि हम उससे समायोजन नहीं कर पाते हैं। अतीत बनकर वह पूरी तरह हमारा हो जाता है। हमें ही क्या हर किसी को अपनी चीज अच्छी लगती है। आज जब उसके बारे में सोचते हैं तो वह जीवन का सर्वाधिक स्वर्णिम काल लगता है। मां कुछ कहने लायक नहीं रही तो उनकी बातें याद की जा रही हैं। पति-पत्नी भी भूतपूर्व होने पर अभूतपूर्व हो जाते हैं। उनका रेशा-रेशा पहले से बदला हुआ लगता है।

बंगले बने तो झोंपड़ी विदा हुई। बिटिया विदा हुई तो बेटे पराये होने लगे। उनकी हर बात और काम याद आने लगे। बहू ओझल हुई तो आत्मा में झांकने की लत पड़ गई। पता नहीं जीते-जी उनमें एक भी गुण नजर नहीं आया। अपने आप रसोई से पञ्चधातु विदा की। कम करती थी हमारा स्टैण्डर्ड।

अब उसी का स्वाद लेने में पैसा और टाइम फूंक रहे हैं पर जरा भी दो से ज्यादा धातु देखने को नहीं मिलती। कहां ताम्बे के घड़े, पीतल के लोटे, भगोनी, लोहे की कढ़ाई, कांसे के, तेल निकालने के बर्तन, चांदी की थाली-कटोरी सब हवा हो गए। घर-घर में इतने थे कि दिनभर घर के बाहर भी रख दो तो कोई छूता न था। अब तो नॉनस्टिक ने सब चौपट कर दिया है। तब गज भर घूंघट और तोले-दर-तोले सोना-चांदी। कहीं खींचा-खांची नहीं। पुलिस तक ईमानदार थी। डॉक्टर तक भले थे और तो और नेता तक।

कहां ब्याह के गीत रात भर गाये जाते थे। बन्ने-बन्नी, घोड़ी, गाली। अब इस डी. जे. ने सबका गला घोंट दिया। तीस-चालीस लोगों का परिवार होता था। हाथोंहाथ काम हो जाता था। कभी आपके पापड़-बड़ी बना लिये। कभी हमारे बना लिये। देवरानी-जेठाणी, ननद-भौजाई हिल-मिलकर एक-दूसरे का काम कर लेते थे। सब्जी रोटी खाते थे। भले ही औसत उम्र कम थी पर बीमारियां नहीं थीं। तब टीवी था ही नहीं इसलिए टाइम की समस्या नहीं थी। अब तो कैंसर, एच.आई.वी., फ्लू, डेंगू और जाने कितने रोग कहां-कहां से टपक गए। तब आदमी अपनी मौत मरते थे। अब मुआ मरियल मरदूद मच्छर तक मर्डर कर रहा है।

चांदनी रात में चांद-तारों की छांव में सोते थे। घर के ठेठ बाहर तक शेर-चीते आते थे। अब तो ताजा हवा तक के दर्शन नहीं होते। सूरज भी तब इतना कहां तपता था। हाय, हमें तो अब ये लोभ व्याप गया है कि जब हम न रहेंगे, तब हमारा गुणगान किस रूप में होगा।

एमजी मोटर इंडिया के पहले शोरूम का शुभारंभ

उदयपुर। एमजी (मोरिस गैराजेस) मोटर इंडिया ने उदयपुर में अपने पहले शोरूम का शुभारंभ किया है। वर्तमान में इस कारमेकर के पास 120 सेंटर्स का नेटवर्क है और कंपनी ने इस वर्ष सितंबर तक भारत में कुल 250 सेंटर्स तक विस्तार करने का लक्ष्य तय किया है।

एमजी मोटर इंडिया के प्रेसिडेन्ट एवं प्रबंध निदेशक राजीव चाबा ने कहा कि हेक्टर भारत की पहली इंटरनेट कार है, जिसमें सर्वश्रेष्ठ श्रेणी की कई विशेषताएं हैं, जो इसे अपने वर्ग का मापदंड बनाती हैं। एमजी हेक्टर का विकास लोकलाइज्ड कंटेन्ट के साथ किया गया है, ताकि नये युग के भारतीय उपभोक्ताओं की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके। पचास से अधिक कनेक्टेड फीचर्स के साथ भारत की पहली इंटरनेट कार हेक्टर में 19 एक्सक्लूसिव प्रोडक्ट फीचर्स होंगे, जो इसे अपने वर्ग का नया मापदंड बनाएंगे। ग्राहकों को शीघ्र ही हेक्टर का अनुभव लेने का मौका मिलेगा और हम एमजी की दुनिया में नये ग्राहकों का स्वागत करने के लिये तैयार हैं। उन्होंने कहा कि भारत में ऑक्टागोनल बैज के नये युग को लाने वाली एमजी हेक्टर में इंटरनेट है, जिसका श्रेय अगली पीढ़ी की आईस्मार्ट टेक्नोलॉजी को जाता है, जो सुरक्षित, कनेक्टेड और मजेदार अनुभव का वचन देती है।

लैंड रोवर डिस्कवरी का नया वैरियंट लॉन्च

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने भारत में मॉडल ईयर 2019 लैंड रोवर डिस्कवरी के 2.0 लीटर डीजल डेरिवेटिव के लॉन्च की घोषणा की। इसकी कीमत 75.18 लाख से शुरू होती है। एस, एसई, एचएसई और एचएसई लक्जरी ट्रिम में उपलब्ध यह नया डेरिवेटिव एक 2.0 एल हाई-पावर्ड डीजल इंजेनियम इंजन से संचालित होता है, जो 177 केडब्ल्यू का पावर आउटपुट और 500 एनएम का पीक टॉर्क पैदा करता है। यह एडवांस इंजन सीरीज सिक्वेंशियल टर्बो टेक्नोलॉजी की सुविधा देने के लिए पहला जगुआर लैंड रोवर पॉवरप्लांट है, ताकि अतिरिक्त जोर डिलिवर किया जा सके।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआईएल) के प्रेसिडेंट और प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि हाई पावर्ड इंजेनियम डीजल वैरिएंट पेश किए जाने के साथ अब डिस्कवरी की बेजोड़ क्षमता और बहुमुखी खूबियां और भी बढ़ गई हैं।

लैंड रोवर की नेवर स्टॉप डिस्कवरिंग, यानी खोज कभी न रुके की भावना का साकार रूप है डिस्कवरी। यह बेहतरीन डिजाइन डिटेल्स से भरपूर, खूबसूरती से तैयार की गई फुल-साइज सात सीट इंटीरियर के साथ ड्रामेटिक पोपोर्शंस, क्लीन मॉडर्न लाइंस और डायनैमिक सिलहॉट का मेल कराती है।

नारायण सिलाई केन्द्र का शुभारंभ

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ में दिव्यांग एवं निर्धन युवाओं के उत्थान एवं पुनर्वास के लिए नारायण सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ व्यवसायी रमेश गोयल, वस्त्र निर्यातक शरद गुप्ता व संस्थापक कैलाश 'मानव' द्वारा किया गया।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि 35 मशीनों के साथ आरम्भ इस केन्द्र में अगले तीन सालों में 500 मशीने लगाई जाकर करीब एक हजार निर्धन एवं दिव्यांग युवाओं को रोजगार से जोड़ा जाएगा। शरद गुप्ता ने 500 पोशाकों की प्रतिमाह सिलाई का आर्डर दिया। रमेश गोयल ने निर्धन एवं दिव्यांग स्कूली विद्यार्थियों की स्कूल ड्रेस की सिलाई के लिए 15 हजार मीटर कपड़ा देने और सिलाई के भुगतान की घोषणा की।

कैलाश 'मानव' ने कहा कि सिलाई केन्द्र में बनने वाले वस्त्र राज्य के उन स्कूलों को भी नि:शुल्क मुहैया करवाएं जाएंगे, जहां कमजोर व निर्धन वर्ग के बच्चे शिक्षा प्राप्त करते है। समारोह में सह संस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, बीना बेन, कन्हैयालाल, हरिसिंह, नंदकिशोर, हरिसिंह भी उपस्थि थे। संचालन महिम जैन ने किया।

मैक्स लाइफ स्मार्ट टर्म प्लान लॉन्च

उदयपुर। मैक्स लाइफइंश्योरेंस कंपनी लि. ने अपने कस्टमाइजेबल 'मैक्स लाइफ स्मार्ट टर्म प्लान' लॉन्च करने की घोषणा की। यह प्लान ग्राहकों को लाभ तथा सुविधाओं की विस्तृत श्रृंखला से अपने मुताबिक चयन कर अपनी सुरक्षा के समाधान को अनुकूलित करने के लिए लचीलापन प्रदान करेगा। मैक्स लाइफ के डायरेक्टर एवं चीफ मार्केटिंग ऑफिसर आलोक भान ने कहा कि टर्म इंश्योरेंस वित्तीय संरक्षण का सबसे किफायती और बुनियादी रूप होने के बावजूद भारत में इसे अपनाने की दर काफी कम बनी हुई है। इंडिया प्रोटेक्शन क्रोशंट' नाम से हाल में किए गए एक अध्ययन, जिसे हमने कंटार आईएमआरबी के साथ मिलकर किया था, उसमें पाया गया कि अधिकांश भारतीय ग्राहक, जिन्होंने अपना जीवन बीमा करा रखा है, वे आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस करते हैं। देश में वित्तीय सुरक्षा के स्तर को बढ़ाने के प्रयास के तहत् हमने 'मैक्स लाइफ स्मार्ट टर्म प्लान' लॉन्च किया, जिसका उद्देश्य टर्म इंश्योरेंस को अपनाने को बढ़ावा देना है तथा यह सुनिश्चित करना है कि केवल उन्हीं लाभों के लिए भुगतान करते हैं, जिसकी आपको जरूरत होती है।

कलाकारों की खोज के लिए आवदेन आमंत्रित

उदयपुर। अबीर चैरिटेबल ट्रस्ट ने हथीसीइंग विजुअल आर्ट सेंटर में अपने वार्षिक फर्स्ट टेक कला कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। फर्स्ट टेक 2019 में छोटे शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों सहित पूरे भारत के कलाकारों से प्रविष्टियां आमंत्रित की गई हैं।

उमंग हथसीइंग, सुबोध केलकर, सुश्री बृंदा मिलर, जयंति रबाड़िया और वीर मुंशी वाली मशहूर जूरी द्वारा कलाकारों की जमा की गई कृतियां शॉर्टलिस्ट की जायेंगी और उनका मूल्यांकन किया जायेगा। आयोजन का समापन 19 नवंबर को होगा, जिसके बाद कला प्रदर्शनी का उद्घाटन किया जायेगा।

फर्स्ट टेक 2019 के लिए कलाकृति जमा करने का ऑनलाइन आवेदन 16 जुलाई तक खुला रहेगा, जबकि भौतिक कलाकृति जमा करने की अंतिम तिथि 6 सितंबर होगी। प्रविष्टियां का सदस्यों द्वारा शॉर्टलिस्ट और जज किया जाएगा। सात दिनों के लिए सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों का प्रदर्शन किया जाएगा, जबकि विभिन्न श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करने वाले 10 कलाकारों को एक विशेष पुरस्कार समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

वीडीसी प्रौद्योगिकी वाली कार नई लॉन्च

उदयपुर। डाट्सुन इंडिया ने भारत में कार मालिकों को वर्ल्ड-क्लास ड्राइविंग अनुभव का लाभ दिलाने की अपनी प्रतिबद्धता के अनुरूप, नई डाट्सुन गो एवं गो+ में सेगमेंट-फर्स्ट सेफ्टी फीचर, व्हीकल डायनमिक कंट्रोल (वीडीसी) टैक्नोलॉजी पेश की है। नई डाट्सुन गो अब नए 'विवड ब्ल' रंग में भी उपलब्ध होगी। हरदीप सिंह बरार, डायरेक्टर सेल्स एंड कमर्शियल, निसान इंडिया ने कहा कि डाट्सुन अपने नए और इनोवेटिव प्रोडक्ट्स के जरिए ग्राहक अनुभव में बदलाव लाने के लिए प्रतिबद्ध है। मोबिलिटी के साथ-साथ सुरक्षा, टैक्नोलॉजी, स्टाइल और सुविधा पर ज़ोर देते हुए नई डाट्सुन गो और गो+ अब वीडीसी से सुसज्जित है ताकि डाट्सुन वाहन मालिकों को भरपूर विश्वास के साथ ड्राइव करने का अनुभव मिल सके। वीडीसी सिस्टम वाहन में लगे सैंसर्स की मदद से व्हील स्पीड, स्टीयरिंग व्हील पॉज़िशन और लेटरल एक्सलरेशन पर नज़र रखता है ताकि इलैक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल मिल सके। कार ओवरस्टीयरिंग और अंडरस्टीयरिंग पर निगरानी रखते हुए यह सिस्टम सुरक्षित ड्राइविंग अनुभव, बेहतर ड्राइवेबिलिटी और अतिरिक्त पावर का लाभ दिलाता है।

जॉन डीअर ट्रैक्टर के सात और हार्वेस्टर का एक मॉडल लॉन्च

उदयपुर। कृषि उपकरण निर्माता जॉन डीअर ने ट्रैक्टर के सात और हार्वेस्टर का एक मॉडल लॉन्च किया है।

कंपनी के प्रबंध निदेशक सतीश नादिगर ने कहा कि लॉन्च किए गए ट्रैक्टर और हार्वेस्टर के नए मॉडलों में से 5405 गियर प्रो 63 एचपी ट्रैक्टर एक गेम चेंजर है और कृषि संबंधी कामकाज को और भी बेहतर बनाता है। इसे खासतौर पर किसानों की तरह-तरह की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है। टिल्ट स्टीयरिंग 1234 टीएसएस ट्रांसमिशन जैसे फीचर्स कृषि लोडर डोजर और ढुलाई सहित कई तरह के काम मुमकिन बनाते हैं। एक एडऑन के रूप में जेडी लिंक (टेलीमैटिक्स) के साथ यह भारतीय किसानों को एक प्रीमियम पेशकश करता है। सेल्स और मार्केटिंग के निदेशक राजेश सिन्हा ने कहा कि 5105 मॉडल भारतीय इतिहास में 40 एचपी श्रेणी में 4 डब्ल्यूडी विकल्प के साथ पहला ट्रैक्टर है।

सिंगल और डुअल क्लच डुअल पीटीओ और एससीवी इसे शुष्क और नम भूमि में अलग-अलग प्रकार के कृषि कार्यों के लिए एक बहुमुखी ट्रैक्टर बनाते हैं। 5005 मॉडल 33 एचपी में अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ लिफ्ट क्षमता जेट स्प्रे कूलिंग सिस्टम वाला मॉडर्न इंजन और 34 किमी प्रति घंटे की चरम रफ्तार के साथ प्लेनेटरी गियर रिडक्शन जैसी उन्नत सुविधाएं शुरुआत करने वाले महत्वाकांक्षी किसानों को समतल खेत उपलब्ध कराती हैं जहां वे मनमुताबिक काम कर सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान, फॉस्टर भारतीय पर्यावरण सोसायटी-ईण्टाली एवं राजस्थान राज्य प्रदूषण मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में लियों का गुड़ा स्थित सेवा महातीर्थ में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान सहभागियों ने पौधारोपण के साथ पर्यावरण सरंक्षण की शपथ ली। संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल के अनुसार विकास की आंधी में हरियाली कम होती जा रही हैं। हर साल प्रदूषण के मामले में बढ़ रहे है। इसका असर बच्चों, जवान और बुजुर्गों पर पड़ रहा है इसीलिए ऐसा प्रण लें कि आने वाली पीढ़ियां साफ सुधरी हवा में सांस ले सकें। संस्थान के सुरक्षा अधिकारी इन्द्रसिंह ने घर, आस-पड़ोस में स्वच्छता के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि ग्लोबल वार्मिंग की वजह से मौसम में आ रहे बदलाव का परिणाम हमारे सामने है। पर्यावरण को बचाने के लिए जंगल, जमीन और पानी को बचाना होगा। कार्यक्रम में विष्णुकुमार रावत, किशनलाल रेगर भी मौजूद थे। संचालन फॉस्टर भारतीय पर्यावरण सोसायटी के ललित नारायण आमेटा ने किया।

यादों की उपलब्धियों में.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

डॉ. मेहता ने इस काम में और अधिक तेजी तथा सफाई लाने के लिए बाबा को देहरादून के दून स्कूल में भेजा जहां प्रख्यात कलाकार सुधीर खास्तगीर के पास रह बाबा ने क्ले मॉडलिंग का कोर्स सीखा।

यह बात सन् 1942 के आंदोलन के दिनों की है। यहीं बाबा ने अपनी एक नन्हीं प्रदर्शनी भी लगाई जो कई दिनों तक चर्चा का विषय बनी रही। बाबा को इस प्रदर्शनी से बड़ा बल मिला।

सन् 1947 में भील जीवन के विविध चित्रों की पहली प्रदर्शनी दिल्ली के ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी की ओर से आयोजित की गई। इसका उद्घाटन सरोजिनी नायडू ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्रीमती नायडू ने कहा था- 'राजस्थान इतना सजीव, रंगीन और रस सम्पूरित है, यह मुझे मालूम नहीं था। बाबा के चित्रों ने मुझे राजस्थान का जो रूप-रंग दिया वह हमेशा के लिए मेरे पटल पर चित्रित रहेगा।'

डॉ. मेहता का सीना गर्व से फूल गया। उन्होंने बाबा को गले लगाया और एक बहुत अच्छे कलाकार साथी को विद्याभवन में पाकर अपने को धन्य माना। यही नहीं, बाबा को तब विद्याभवन से जो कुछ मिलता था उसमें 25.00 प्रतिमाह की वृद्धि करदी।

इससे यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि डॉ. मेहता अपने साथियों के विकास, यश और उन्नति के लिए कितने यत्नशील, उत्कंठित और आशावान रहते थे। वनस्थली विद्यापीठ में बाबा ने फ्रेस्को का काम भी सीखा।

फिर तो बाबा की कई प्रदर्शनियां लगीं। अच्छे-ऊंचे पत्रों में उनकी चित्रकृतियां प्रकाशित हुईं। मान-सम्मान और राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। बारह वर्ष तक राजस्थान ललित कला अकादमी के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित किया और कइयों को अपनी इस कला की ओर प्रेरित-पारंगत किया। ललित कला अकादमी ने परम्परावादी चित्रशैली के सर्वश्रेष्ठ चित्रकार के नाते बाबा को कई बार पुरस्कृत किया और 'कलाविद्' की मानद उपाधि से विभूषित किया।

'राजस्थान के तीन मन्दिर' नाम से एक सचित्र पुस्तिका भी इस अकादमी ने प्रकाशित की जिसमें बाबा के मुंह बोलते चित्र पाषाणों में प्राण फूंकते दृष्टिगोचर होते हैं। देश-विदेश के संग्रहालयों तथा हवाईअड्डों पर बाबा के चित्र अपना रंग बिखेरते हुए प्रत्येक दर्शक को मोहित करते। जयपुर का रेल्वे स्टेशन बाबा की फ्रेस्को पेंटिंग में उदयपुर की गणगौर सवारी लिए अपने गुलाबीपन का गौरव बढ़तर रहा।

सब कुछ होते हुए भी बाबा ने अपने कला-शिक्षण को ही जीवन की सर्वोपरि सम्पदा माना। अपनेआप को बहुत बड़ा कलाकार वे नहीं मानते अपितु वे कहते कि अब तक वे कलाकार थे ही कहां! एक कला-शिक्षक थे।

कलाकार के क्षेत्र में तो अब कूदे हैं। वे चाहते, एक आर्ट गेलेरी स्थापित करना, जहां आकर कला-पिपासु अपनी प्यास बुझायें। लोगों की परख हों, अच्छे प्रतिभाशाली कलाकारों को सही मार्गदर्शन प्राप्त हो। 'तूलिका' कला परिषद जिसके वे अध्यक्ष थे, के माध्यम से कला के क्षेत्र में पुनर्जागरण और क्रांति के कई सारे सपनों को भी आकार-साकार करने की उनकी योजनाएं थीं मगर उचित वातावरण और योग्य युवकों की तलाश उन्हें कोई फल नहीं दे पाई।

वस्तुत: बाबा ने बया बनकर अपनी कला के घोंसले को स्वयं निर्मित किया। भीलों की झोंपड़ियों में रहकर उनके गृह-आंगन को माण्डा। गड़रियों के साथ उनकी छारियों-बकरियों को दूहते अपने चित्रों को दूधियाया। वनवासियों के साथ वनजीवी बनकर टेसू के खिलते फूल और आम के मोड़ की सुगन्धी सूंघी।

हल चलाते किसान का हल अपने हाथ में धरा। गाड़ियां चलाते गाड़िये और औजार बनाते लुहार की मिर्चें खाण्डकर मसाला तैयार किया और उनकी घट्टी घमोड़ी। सड़क कूटते मजदूर का जीना और मजदूरनी का पसीना होते देखा। इसलिए उनकी कला में वह सब कुछ है जो बासी नहीं है। प्रतिदिन खिलते फूलों की महक, छवि और सौंदर्य-श्री है। विलासिता और भौतिकता की मादकता नहीं वरन् पवित्रता और आध्यात्मिकता का मंगल मांगल्य है।

आदिवासी भील जिन्होंने मेवाड़ की धजा धामते हुए बाप्पारावल को सिंहासनारूढ़ कराया। महाराणा प्रताप की आन, मान और मर्यादा के रक्षक, पोषक, पालक बन अकबर को अंगोठा दिखाया। ऐसे कर्तव्य-धर्म के शूर-सिंहों को अपनी तूलिका का तीर तरकश देकर बाबा ने उन्हें जीवंत किया।

वे कहते, इन भीलों के जीवन में जो शक्ति, शौर्य, भक्ति और जो विविधता, मस्त मांसलता है, जो उल्लास, आश, अल्हड़ता है उसी ने उन्हें ऐसा करने को कायल किया है। उनका वन और उनकी चितवन, उनका मन और उनका जीवन, मस्तपन और यौवन अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।

बाबा प्रयोगधर्मी, कलामर्मी थे। महावीर, बुद्ध और वे सभी महात्मा उनकी कलम में पूजे गए जो आदमी को आदमी का बोध देकर उसे बोधगम्य बनाते हैं।

बाबा जब तक रहे, रंग, रूप और रस के संसार में उनकी आयु कभी उतनी लम्बी नजर नहीं आई। राजस्थान की मिट्टी का, रंगों का जो महत्व है वह उन्हें एक महत्वपूर्ण हैसियत प्रदान करता है। दरसल गोवर्द्धन जोशी होने का मतलब भी यही है। कितने लोग होंगे जो अपने प्रांत के रंगों को, आकृतियों को पहचान और गरिमा देते हुए अंतर्राष्ट्रीय कलाधर्मियों में महत्वपूर्ण स्थान बना पाते हैं!

यदि बाबा ने अंतर्राष्ट्रीय चित्रकर्मियों के बीच अपनी पहचान बनाई है तो इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने पाश्चात्य जीवन को स्वीकार किया है बल्कि अपने देशी रंगों की नानाविध छवियों को इन्द्रधनुष में उतारना उनकी चित्रकारी की विशेष महत्ता रही है। वे इसलिए महत्वपूर्ण बने रहे कि उन्होंने अपने इर्दगिर्द के जीवन को बड़ी गहराई से स्वयं अपनी आंखों से देखा।

यह आंख भी केवल उन्हीं के पास थी। जब बहुत सा समय, काल व्यतीत हो जायेगा तब भी राजस्थान के अनाम अकिंचन लोग उनकी चित्रकला के माध्यम से अपनी अद्भुत पहचान बनाते हुए अशेष काल तक जीवित रहेंगे।

बाबा की मेरे साथ उनके पंचवटी स्थित घर की, मेरे कृष्णपुरा स्थित निवास की और भारतीय लोककला मंडल में काम करते मेरी तथा सामरजी के साथ हुई भेंटों की अनेक स्मृतियां, अनेक छवियां तथा अनेक बतकहियां हैं किंतु सर्वोपरि उनकी वह देन, उनके हाथों चित्रित भीलों के गवरी नृत्य की चित्रावली है जो उन्होंने बड़े उल्लास, उत्साह तथा उमंग के साथ मेरे लिए तैयार कर मुझे भेंट की थी।

कहा था, वर्षों तक लोग कहते रहेंगे कि एक तो गोरधन बाबा था जिसने भीलों की, केवल भीलों की चित्रात्मक चरितावली को अपना जीवन-कर्म बनाया और दूसरा महेंद्र भानावत था जिसने उन आदिवासियों के गवरी नृत्य पर शोध कर विश्वविद्यालय को लोकसाहित्य की गरिमामय प्रतिष्ठा का सर्वोत्तम उपहार दिया।

बाबा का वह चित्र सन् 1968 से आज भी मेरी मुख्य बैठक की रौनक बना हर मिलने आने वाले की उपलब्धि तैयार करता है।

सम्मान

वड़ोदरा। नारी अस्मिता के रजत जयंती वर्ष पर 100वें अंक के

लोकार्पण समारोह में कोमल वाधवानी के लघुकथा संग्रह 'नयन नीर' को अस्मिता सम्मान 2018 से पुरस्कृत किया गया।

खबरों का पिटारा

उदयपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय में 'बीट एयर पोल्यूशन' थीम पर समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर जिंक चिकित्सालय में एल. एस. शेखावत, नीलिमा खेतान, के.सी. मीना, अरूण विजय कुमार, संजय शर्मा, प्रवीणकुमार शर्मा, स्वयं सौरभ, राजेन्द्रसिंह आहुजा, वी.पी. जोशी तथा कंपनी के कर्मचारियों ने सीताफल, अमरूद, नीम एवं आम का पौधारोपण किया।

कांकरोली। जेके टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लि. में विश्व पर्यावरण दिवस पर सुरक्षा एवं पर्यावरण प्रबंधक अतुल मिश्रा तथा कमर्शियल महाप्रबंधक अनिल मिश्रा की उपस्थिति में डी. एस. सीरवी, राकेश श्रीवास्तव, डी. के. पोरवाल, रवि पंथ, एम. के. शर्मा, एस. एस. चारण, पी. के. जैन, पवन राजपूत, पारस जैन, बाबू लाल, ऋषि पाल, यूनियन के पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पौधारोपण किया गया।

उदयपुर। महाराणा प्रताप जयंती पर 06 जून को सिटी पेलेस में लगी प्रदर्शनी के दौरान अरविन्दसिंह मेवाड़ ने किशनलाल वर्मा लिखित 'कीका को परताप' नामक प्रबन्धात्मक महाकाव्य का लोकार्पण किया। पन्द्रह सोपानों में इस महाकाव्य में अकबर भेदनीति और प्रताप स्वाभिमान की अमर गाथा को दर्शाया है। यथा-

कीका प्यारौ नाव धर्‌यौ छै भील गरास्या वीरां नै।
भेदभाव की खायां मेटी, कुंवर तरास्या हीरां नै।।

विषयवस्तु में गुहिलवंश के इतिहास से सम्बन्धित अनेक रोचक एवं ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी दी गई हैं।

उदयपुर। महाराणा मेवाड़ चैरिटेबल फाउण्डेशन की ओर से लोककला मण्डल के मंच पर प्रताप के जीवन पर काव्यगान, विरूदावली एवं लघु नाटिका की प्रस्तुतियां हुईं। समारोह में फाउण्डेशन के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध न्यासी अरविन्दसिंह मेवाड़ ने अपनी उपस्थिति दी। ख्यातनाम कवि माधव दरक ने मायड़ थारो वो पूत कठै, तथा एड़ो म्हारो राजस्थान नामक अपनी लोकप्रिय कविताओं का पाठ कर सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

उदयपुर। विज्ञान समिति सभागार में 'महाराणा प्रताप काल का सम्पूर्ण पर्यावरण' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता इतिहासकार डॉ. देव कोठारी ने प्रताप के राजतिलक, घास की रोटी एवं हल्दीघाटी युद्ध तथा उस युग के वन, मृदा, पेड़, वन्यजीव, खेती व पर्यावरण पर नवीन जानकारी दी। कवि माधव दरक ने लोकप्रिय गीतों से सबको मन्त्र-मुग्ध कर दिया। विज्ञान समिति के संस्थापक डॉ. के. एल. कोठारी तथा अध्यक्ष डॉ. एल. एल. धाकड़ ने आगन्तुकों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि डॉ. बी. एच. बाफना थे। अध्यक्षता डॉ. बी. पी. भटनागर ने की। सजीव सेवा समिति के महासचिव शान्तिलाल भण्डारी ने कार्यक्रम का परिचय तथा एडवोकेट फतहलाल नागौरी ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ. सुजानसिंह, डॉ. महीप भटनागर, सज्जन कुमार, डॉ. महेश शर्मा, सज्जनसिंह राणावत, ललित पाण्डे, आर. के. नेभनानी, डॉ. के. पी. तलेसरा, प्रकाश तांतेड़, डॉ. आर. के. गर्ग सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

एक नजर हॉस्पिटल की अब तक की सफलता पर....

- 20,36,312 लेब इन्वेस्टिगेशन (जाँच व सभी प्रकार के टेस्ट)
- 14,43,709 ओपीडी रोगियों का सफल इलाज
- 10,9,013 आईपीडी रोगियों का सफल इलाज
- 82,658 सफल सर्जरी
- 29,790 जटिल ऑपरेशन
- 25,427 मरीजों का भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत ईलाज
- 5,330 ऑपरेशन जनसंख्या स्थिरीकरण (नसबन्दी) प्राइवेट संस्थाओं में प्रथम
- 1,350 रोगियों की सफल मोतियाबिन्द सर्जरी
- 650 बेड वाला अंतरराष्ट्रीय स्तर का हॉस्पिटल
- 510 से ज्यादा सफल ऑपरेशन जन्मजात विकृत कटे होठ का राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत
- 49 पंजीकृत रोगियों का इलाज एंटी रेट्रोवाईरल थैरेपी (ART) से

PIMS देश और प्रदेश के हर व्यक्ति को विश्व स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराता संभाग का सर्वश्रेष्ठ हॉस्पीटल व मेडिकल कॉलेज

24/7 EMERGENCY SERVICE आपातकालीन सुविधाएं उपलब्ध

सबसे कम दरों पर सबसे बेहतर इलाज

PIMS हॉस्पीटल एण्ड मेडिकल कॉलेज, उमरड़ा, उदयपुर

उपलब्ध सुविधाएं

- 2014 में स्थापित हुआ मेडिकल इंस्टीट्यूट में हर तरह के ईलाज की सुविधा।
- आधुनिक मशीने एवं एक्सपर्ट डॉक्टर्स की टीम।
- विश्वस्तरीय आधुनिक कैथ लेब– CT Scan (128 Slice), MRI (1.5T), एक्स–रे सोनोग्राफी की सुविधा।
- डायलिसीस की सुविधा। (हेपेटाईटिस बी पोजेटिव व HIV के मरीजों के लिए अलग से डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध है)
- ट्रोमा सेन्टर एवं उच्च स्तरीय आपातकालीन विभाग।
- विश्वस्तरी मशीनों द्वारा जाँच व निदान।

18 हाई टेक्नोलोजी डायलेसिस मशीन

AWARD वर्ष 2015 – 2019 में PIMS को मिले अवार्ड

- वर्ष 2016 – 2018 में उदयपुर जिले में जनसंख्या स्थरिकरण कार्यक्रम (नसबन्दी) के अन्तर्गत परिवार कल्याण के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने के लिये PIMS संस्था को सम्मानित किया गया।
- वर्ष 2018 में विश्व जनसंख्या दिवस पर राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2017–18 में निजी संस्थानों में कीये गये सर्वाधिक ऑपरेशन के लिये PIMS को पुरस्कृत किया गया।
- वर्ष 2019 राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम (RBSK) द्वारा PIMS को हृदय रोग उपचार के लिये सम्मानित किया गया।

हमारा लक्ष्य आमजन को बहुत कम दरों पर मिले बेहतरीन चिकित्सा सुविधाएं : आशीष अग्रवाल

आशीष अग्रवाल
चेयरमेन
PIMS

पीआईएमएस के माध्यम से हमारा लक्ष्य है कि यहां आने वाले आमजन को संभाग में सबसे कम दरों पर सबसे बेहतरीन चिकित्सा सुविधाएं मिल सके। इसके लिए हमने सरकार के साथ भामाशाह, RBSK, परिवार नियोजन व जननी सुरक्षा, RNTCP, NPCD, तथा अन्य कई योजनाओं को लागू किया है, जिससे की इन योजनाओं के अन्तर्गत आने वाले मरीजों को निःशुल्क उपचार मिल सके, वहीं चिकित्सा के लिए देश के जाने माने संस्थानों की फेकल्टी व सभी अत्याधुनिक इक्यूपमेंट स्थापित किए गए है, वहीं मेडिकल की पढ़ाई के लिए कॉलेज परिसर में सभी आवश्यक मापदंड उपलब्ध है।

मल्टीसुपरस्पेशियलिटी सुविधाएं

कार्डियक सर्जरी | कार्डियोलॉजी | न्यूरो सर्जरी | कैंसर सर्जरी | यूरोलॉजी | प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी | पीडिएट्रीक सर्जरी | नेफ्रोलोजी

- **5843** डायलिसिस
- **3470** यूरोलॉजी सर्जरी
- **691** न्यूरो सर्जरी
- **605** पीडिएट्रीक सर्जरी
- **560** प्लास्टिक एवं बर्न सर्जरी
- **298** कैंसर सर्जरी
- **200** कैथ लेब प्रोसीजर (केवल 4 माह में)
- **80** ओपन हार्ट सर्जरी (केवल 4 माह में)

प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ ICU में से एक | प्रदेश का प्रथम पीपीपी मोड़ ART सेन्टर

आमजन हेतु उपलब्ध सरकारी सुविधाएं

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना | RBSK राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम | राजस्थान एड्स कन्ट्रोल सोसायटी | परिवार नियोजन एवं जननी सुरक्षा योजना | डॉट्स टी.बी. एवं क्षय रोग

डायग्नोस्टिक विश्वस्तरीय मशीनों द्वारा जांच व निदान, MRI (1.5 T), CT-Scan (128 Slice), CD4 Count की सुविधा उपलब्ध, अल्ट्रासाउण्ड, इको कार्डियोग्राम, एलर्जी टेस्ट (Phadia 100), Hb-Vario (HPCL), ADVIAXP (CLIA), TB-PCR (Gene Xpert)

▸ मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर ▸ सी.सी.यू. आई.सी.यू. ▸ पी.आई.सी.यू. ▸ एन.आई.सी.सी.यू. ▸ एन.आई.सी.यू. ▸ बर्न आई.सी.यू. ▸ ब्लड बैंक

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस
MBBS

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग	वेंकटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग	वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ फिज़ियोथेरेपी	वेंकटेश्वर ईंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी
B.Sc., M.Sc. (नर्सिंग)	GNM	BPT	D. Pharmacy

Mob. : 9549452185, 9549450553

PIMS पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, उमरड़ा, उदयपुर

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3010000, Mob.: 8696440666 | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

Star Ad Media Pvt. Ltd.

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर – 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311–ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294–2429291, मोबाइल – 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।